है कि उसके जो खून के आँसू धरती पर गिरे हैं, वे ही वीरबहूटी बनकर रेंगने लगे हैं। इस कीड़े को इन्द्रवधू और राम की गुडिया भी कहते हैं।

सावन बरस मेह अति पानी, भरनि परी हौं बिरह झुरानी।
रकत कै आँसु परहि भुइँ टूटी, रैंगि चली जनु वीरबहूटी।
बाट असूझ अथाह गँभीरी, जिउ बाउर, भा फिरै भँभीरी।

भादों के महीने में वर्षा का वेग अत्यधिक हो गया। भादों के महीने की रात बहुत अंधकारमयी हो जाती है। बिजली चमकती है और बादल गरजकर नागमती को डराते हैं। इस प्रकार विरह में प्राण गले जा रहे हैं। मघा नक्षत्र में मूसलाधार वर्षा हो रही है और महल के भीतर नागमती की दोनों आँखों से आंसू इस प्रकार गिर रहे हैं, जैसे छप्पर के नीचे वाले भाग से पानी नीचे गिरता है। पूर्वा भाद्रपद नक्षत्र लगने पर पूरी धरती पानी से भर गयी है। इस वर्षा के कारण नागमती आक और जवासे के समान जलकर रह गयी है—

भा भादौं दूभर अति भारी, कैसे भरौं रैनि अँधियारी।
चमक बीजू घन गरजि तरासा, विरह काल होइ जीउ गरासा।
बरसै मघा झकोरि-झकोरी, मोरे दुइ नयन चुवहिं जस ओरी।
पुरवा लाग भूमि जल पूरी, आक जवास भई तस झूरी।

क्वार के महीने में वर्षा कम हो जाती है। बादलों के न होने से सभी ओर प्रकाश होने लगता है। जंगल में काँस फूल जाते हैं जो वर्षा के समाप्त होने का संकेत है। तुलसीदास ने काँसों को वर्षा ऋतु-रूपी नारी के श्वेत केश मानकर उसके बुढापे का चिह्न बताया है—

फूले काँस रहे महि छाई, जनु वर्षा कृत प्रकट बुढ़ाई

पपीहे के मुँह में स्वाति नक्षत्र की वर्षा की बूंद पड़ती है। वही बूँद सागर की सीप के मुंह में पड़ जाती है तो उसमें मोती भर जाते हैं। वर्षा ऋतु में नदियों और सरोवरों का जल गँदला होने से हंस मानसरोदर में चले जाते हैं। क्वार में जल स्वच्छ होने पर वे पुन लौट आते हैं। स्वच्छ जल में सारस किलोलें करने लगते हैं और खंजन पक्षी भी दिखाई देने लगता है—

लाग कुवार नीर जग घटा, अबहूँ आउ कंत तन लटा।
चित्रामित्र मीन कर आया, पपिहा पीउ पुकारत पावा।
स्वाति बूंद चातक मुख परे, समुद सीप मोती सब भरे।
सरवर सँवरि हंस चलि आए, सारस कुरलहिं खंजन देखाए।
भा परगास काँस बन फूले, कंत न फिरे, विदेसहिं भूले।

कातिक के महीने में शरद ऋतु आ जाती है। शरद ऋतु में चन्द्रमा की चाँदनी अति शीतल लगती है, पर वह नागमती को जलाती है। कातिक के महीने में ही दिवाली का त्यौहार होता है। सभी लोग दिवाली का त्यौहार मना रहे हैं, पर नागमती पति के घर न होने से अपने सिर में धूल डाल रही है—

कातिक सरद चंद उजियारी, जग सीतल हों बिरहै जारी।
अबहूँ निठुर आउ यहि बारा, परब दिवारी होइ संसारा।
सखि मानें त्यौहार सब, गाइ दिवारी खेलि।
हौं का गावौं कन्त बिनु रही छार सिर मेलि॥

जायसी ने इसी प्रकार वर्ष के पूरे बारह महीनों के प्रकृति-वर्णन के साथ-साथ नागमती के दु:ख का वर्णन किया है—

षड्ऋतु वर्णन के रूप में प्रकृति-वर्णन—जायसी ने छः ऋतुओं के रूप में प्रकृति की छटा का वर्णन भी पद्मावती के सुखी जीवन के प्रसंग में किया है। षड्ऋतु-वर्णन बसंत ऋतु से आरम्भ हुआ है। बसन्त से नये वर्ष का आरम्भ माना जाता है। बसन्त ऋतु चैत और बैसाख में होती है। बसन्त ऋतु के दर्णन में प्रकृति की शोभा का वर्णन कम है और पद्मावती के वस्त्रों और सुख-योग का वर्णन अधिक है—

Scanned with CamScanner

प्रथम बसंत नवल ऋतु आई, सु ऋतु चैत-बैसाख सुहाई।
चंदन चीर पहिरि धनि अंगा, सेंदुर दीन्ह बिहँसि भरि मंगा।
होइ फाग भलि चाँचरि जोरी, बिरह जराइ दीन्ह जसि होरी।
धनि ससि सरिस तपै पिंगलूरू, नखत सिंगार होहिं सब चूरू।

ग्रीष्म ऋतु जेठ और असाढ़ के महीने में पाई जाती है। ग्रीष्म ऋतु में जिन घरों में पति घर पर रहता है, पत्नियाँ सुन्दर रंग की साड़ियाँ पहनती हैं तथा भीनी गंध लगाती हैं। दाडिम अर्थात अनार तथा अंगूर का रस पिया जा रहा था। डाली पर आम का फल पक गया था। हरे रंग के शरीर वाला तोता इन फलों को चखने वाला था।

ऋतु ग्रीष्म के तपनि न तहाँ, जेठ असाढ़ कंत घर जहाँ।
पहिरि सुरग चीर धनि झीना, परिमल भेदि रहा तन भीना।
पदमावति राजसिअर सुबासा, नैहर राज कंत घर बासा।
दारिउँ दाख लेहिं रस, आम सदा झर डार।
हरिअर तन सुअटा कर, जो अस चाखनहार॥

वर्षा सावन—भादों में पायी जाती है। यदि वर्षा ऋतु में पति मिल जाता है तो यह ऋतु बहुत सुहावनी लगती है। वर्षा ऋतु में कोयल बोलने लगती है और बगुले पंक्ति बनाकर उड़ने लगते हैं। स्त्रियाँ घर से इस ऋतु में रंग-बिरंगे कपड़े पहनकर निकलती हैं, जैसे चीरबहूटी होती है। ऊँची चौपाल पर शीतल जल की बूँदें पड़ती हैं। सारा संसार हरा-हरा ही दिखाई देता है। धरती हरे रंग की हो रही है और पद्मावती ने लाल रंग के वस्त्र पहन रखे हैं। वह अपने पति रत्नसेन के साथ हिंडोले पर झूल रही है—

रितु पावस बरसे पिक पावा, सावन भादौं अधिक सोहावा।
पदमावति चाहत ऋतु आई, गगन सोहर वन भूमि सोहाई
हरियर भूमि कुसुंभी चोला, औ धनि पिउ सँग रचाहिं डोला।

जायसी ने इसी प्रकार छहों ऋतुओं में पद्मावती के सुखभोग का वर्णन किया है। 'पद्मावत' में ऋतु-वर्णन पर्याप्त मात्रा में है। यह ऋतु-वर्णन 'पद्मावत' की प्रमुख विशेषता है।

Scanned with CamScanner